

# डॉ. टिम गोम्बिस , गलातियों, सत्र 6, गलातियों 4:1-5:1

© 2024 टिम गोम्बिस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टिम गोम्बिस और गलातियों की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह गलातियों 4:1-5:1 पर सत्र 6 है।

गलातियों पर छठे व्याख्यान में आपका स्वागत है। इस व्याख्यान में, हम गलातियों 4.1 से 5.1 को कवर करने जा रहे हैं। हम गलातियों 3 से जटिल, हमारे लिए जटिल, तर्कों का एक समूह लेकर आ रहे हैं जो पॉल ने दिए हैं। लेकिन याद रखें, पॉल अपनी सारी शिक्षा, अपनी सारी शिक्षा, इस तथ्य को सामने ला रहा है कि उसका मन और दिल पवित्रशास्त्र से भरा हुआ है। वह अपने यहूदी ईसाई विरोधियों के साथ ये सभी तर्क पेश करता है जो गलातिया में हैं।

और अब वह अध्याय चार में गलातियों के अन्यजातियों को कुछ उपदेश देने जा रहा है। उन उपदेशों में से पहला उपदेश अध्याय चार में है, एक से ग्यारह तक, जहाँ पौलुस अपने श्रोताओं, अपने श्रोताओं को उपदेश देता है कि वे गुलामी में न लौटें। गुलामी में न लौटें।

और यहाँ गलातियों के सर्वनाशकारी संदर्भ को ध्यान में रखना वास्तव में सहायक है, या मुझे कहना चाहिए कि पॉल का सर्वनाशकारी धर्मशास्त्र। कहने का तात्पर्य यह है कि पॉल धर्मशास्त्रीय रूप से एक ऐसे कैनवास पर काम कर रहा है जो पूरे ब्रह्मांड में फैला हुआ है। वह युगों, पुराने युग और नए युग के संदर्भ में सोच रहा है।

वह इन ब्रह्मांडीय शक्तियों के बारे में सोच रहा है जो काम कर रही हैं, पाप और मृत्यु और शरीर की ब्रह्मांडीय शक्ति जिसने परमेश्वर की दुनिया को संक्रमित कर दिया है। गलातियों का ग्रंथ कोई सर्वनाशकारी साहित्य नहीं है। इसमें साहसिक निर्णय और घुड़सवार और उस तरह की सभी चीजें शामिल नहीं हैं, लेकिन यह एक तरह से सर्वनाशकारी मंच पर है क्योंकि इसमें पृथ्वी पर गतिविधि और स्वर्ग में गतिविधि शामिल है।

भौतिक क्षेत्र में गतिविधि जिसमें लोग अपने शरीर को कैसे सजाते हैं। क्या उन्हें अपने शरीर को यहूदी शरीर की तरह सजाना चाहिए? तो, यह भौतिक क्षेत्र है। फिर आध्यात्मिक क्षेत्र है।

पाप और शरीर और मृत्यु और ब्रह्मांडीय शत्रु यहाँ दृष्टि में हैं। और, बेशक, ऐसी ब्रह्मांडीय वास्तविकताएँ हैं जिनके बारे में पॉल बात करता है जिसने सब कुछ बदल दिया है क्योंकि ईश्वर और मसीह ने यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में वास्तविकता को बदल दिया है और आत्मा की स्थापना ने आध्यात्मिक क्षेत्र में खेल को पूरी तरह से बदल दिया है, और यह भौतिक क्षेत्र में सन्निहित है। इसलिए, अंततः, पॉल अपने श्रोताओं को यह बताना चाहता है कि गैर-यहूदी यह नहीं सोचते कि आपको यहूदी धर्म में परिवर्तित होना है।

आप बिना जातीयता बदले केवल ईश्वर के प्रति आस्था या वफ़ादारी प्रदान करके मसीह में बचाए जा सकते हैं। भौतिक क्षेत्र में वह वास्तविकता आध्यात्मिक क्षेत्र में घटित सभी प्रकार की विभिन्न वास्तविकताओं का भौतिक अवतार है। इसलिए, बस इतना ही कहना है कि जब हम पॉल के धर्मशास्त्र के सर्वनाशकारी दायरे के बारे में बात करते हैं, तो मैं इस बारे में बात कर रहा हूँ कि कैसे नाटक सांसारिक मंच पर और आध्यात्मिक क्षेत्र में भी किया जाता है।

खैर, गलातियों 4, 1 से 11 में पॉल का तर्क कुछ सर्वनाशकारी तत्वों पर निर्भर करता है, और ये अध्याय 4 के श्लोक 3 में पाए जाते हैं जब वह कहता है कि हम भी जब बच्चे थे, तब संसार की मूल बातों के अधीन दासता में थे। संसार की मूल बातें यूनानी शब्द स्टोइकिया है, जिसका यहूदी दृष्टिकोण से अर्थ बहुत ही रणनीतिक है। उस शब्द का प्रयोग श्लोक 9 में भी किया गया है। ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम फिर से उन कमज़ोर और बेकार मूल बातों की ओर लौट जाओ, जिनके तुम फिर से गुलाम बनना चाहते हो? एक और भी है, माफ़ करना, यहाँ श्लोक 8 में एक और अभिव्यक्ति का भी इस्तेमाल किया गया है। हालाँकि, उस समय, जब तुम परमेश्वर को नहीं जानते थे, तुम उन लोगों के दास थे, जो स्वभाव से, ईश्वर नहीं हैं।

तो, ये आध्यात्मिक संस्थाएँ हैं, जिन्हें स्टोइकिया या पॉल कहते हैं, देवता नहीं हैं; ये वास्तव में आध्यात्मिक संस्थाएँ हैं जो पॉल के सर्वनाशकारी धर्मशास्त्र में एक रणनीतिक भूमिका निभाती हैं। पुराने नियम की चीज़ों की अवधारणा पर, ये आप जानते हैं, यहूदी ग्रंथों में राष्ट्रों के देवता या राष्ट्रों के स्वर्गदूत कभी-कभी राष्ट्रों के स्वर्गदूतों के बारे में बात करते हैं। अय्यूब में, इन्हें ईश्वर के पुत्रों के रूप में संदर्भित किया जाता है।

वे दानियेल, दानियेल 10 में दिखाई देते हैं। फारस के राजकुमार और यूनान के राजकुमार वहाँ दिखाई देते हैं। चीज़ों के बारे में पॉल के धार्मिक दृष्टिकोण को याद रखें, या मुझे कहना चाहिए कि चीज़ों के बारे में पुराने नियम का दृष्टिकोण, पुराने नियम की अपेक्षाएँ और यहूदी अपेक्षाएँ। इस युग में वर्तमान दुष्ट युग था, और यह एक ऐसा युग था जिसकी देखरेख इन सभी महादूत शासक आकृतियों या राष्ट्रों के इन देवताओं, इन आध्यात्मिक संस्थाओं द्वारा की जाती थी जो बड़े स्तर पर ईश्वर की दुनिया की देखरेख करते थे।

राक्षसों या आत्माओं के बारे में मत सोचिए जो अक्सर सुसमाचार के पन्नों में संक्रमित या प्रभावित या उत्पीड़ित या गुलाम या व्यक्तिगत शरीरों में निवास करते हैं। ये महान शक्ति वाली आध्यात्मिक संस्थाएँ हैं जो एक तरह से बड़े स्तर पर काम करती हैं, राष्ट्रों के जीवन की देखरेख करती हैं। वे संस्कृति की प्रकृति की देखरेख करते हैं।

वे सांस्कृतिक प्रतिमानों और सांस्कृतिक मान्यताओं की देखरेख करते हैं। व्यवस्थाविवरण 32 में, पाठ कहता है कि व्यवस्थाविवरण 32 8 में परमेश्वर ने राष्ट्रों की संख्या के अनुसार इनमें से कई व्यक्तियों को नियुक्त किया।

इसलिए, इन सभी राष्ट्रों पर, परमेश्वर ने इन व्यक्तियों में से एक को, राष्ट्रों के देवताओं में से एक को या राष्ट्रों के एक देवदूत को नियुक्त किया, ताकि उस राष्ट्र के जीवन को व्यवस्थित और देखरेख कर सके। लेकिन पुराने नियम की धारणा के अनुसार, परमेश्वर स्वयं ही वह व्यक्ति था

जो इस्राएल के जीवन की देखरेख करता था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह परमेश्वर की योजना के अनुसार था, यहाँ तक कि पतन से अलग भी, कि परमेश्वर, जो अक्सर मध्यस्थों के माध्यम से काम करता है, मानवता के माध्यम से पृथ्वी पर अपने शासन की देखरेख करता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने इन महादूत शासक आकृतियों, ईश्वर के इन पुत्रों, या राष्ट्रों के इन देवताओं के माध्यम से अपनी रचना के बड़े तत्वों की देखरेख भी की। और यह एक तरह से डिज़ाइन के अनुसार था, उनका ऐसा करने का इरादा था। खैर, यहूदी परंपरा के अनुसार, इनमें से अधिकांश या अधिकांश महादूत शासक आकृतियाँ, राष्ट्रों के ये देवता, या कुछ यहूदी ग्रंथों में जिन्हें स्टोइकिया कहा जाता है, जिन्हें पॉल ने यहाँ दो बार कहा है, इन आकृतियों ने विद्रोह किया है और वे अब ईश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध काम कर रहे हैं।

और ये वे आकृतियाँ हैं जो सृष्टि को गुलाम बनाए हुए हैं। और जब यहूदियों ने, और यह डैनियल में परिलक्षित होता है, जब यहूदियों ने अन्य राष्ट्रों के जीवन को देखा, और उन्होंने उन राष्ट्रों को एक राष्ट्रीय जीवन के रूप में देखा जो मूर्तिपूजा के गुलाम थे, तो यहूदियों ने क्या सोचा होगा कि ये वे राष्ट्र हैं जो इन महादूतों में से किसी एक या इनमें से किसी एक द्वारा, आप जानते हैं, राष्ट्र के एक देवता द्वारा एक सच्चे ईश्वर से भटकाए जा रहे हैं। और उन्हें झूठ बोला जा रहा है कि इस तरह का एक पूरा है, आप जानते हैं, एक मूर्ति है जो उस राष्ट्र की देखरेख करती है।

उस झूठ के पीछे, उस मूर्ति के पीछे, वास्तव में इन देवताओं की तरह की आकृतियाँ हैं, यह एक सच्चे ईश्वर की रचना है जिसे उस राष्ट्र के जीवन पर शासन करने के लिए नियुक्त किया गया था। तो बस इतना कहना है कि जब पॉल, एक ब्रह्मांडीय स्तर पर, जब पॉल वर्तमान बुरे युग के जीवन की कल्पना करता है, तो वह कल्पना करता है कि यही कारण है कि वह इसे वर्तमान बुरा युग कहता है, क्योंकि यह एक ऐसा युग है जिसकी देखरेख इन पात्रों की एक श्रृंखला द्वारा की जाती है जो खड़े हैं और वे ईश्वर के शासन के खिलाफ एक साथ खड़े हैं, ठीक है। और पॉल चीजों को कैसे कॉन्फ़िगर करता है, और इस तरह से वह यहाँ गलातियों में धर्मशास्त्र करता है, और यह एक तरह से सोचने का एक और तरीका है, मुझे लगता है, यहूदी धर्म और मोज़ेक कानून के बारे में ठीक से।

इस तरह के युग में, गुलामी के संदर्भ में, परमेश्वर ने मूसा का कानून भेजा, और उसने इस तरह के संदर्भ में इस्राएल राष्ट्र का निर्माण किया। तो, गुलामी की लौकिक स्थिति में, आप जानते हैं, परमेश्वर कानून देता है और इस्राएल का निर्माण करता है। बाद में, यह यहूदी धर्म बन गया। और पॉल के धार्मिक दृष्टिकोण में, ये सभी परमेश्वर की ओर से उपहार हैं।

मूसा का नियम परमेश्वर की ओर से एक उपहार है। इस्राएल को एक अलग जाति, परमेश्वर के प्रिय लोग होना था, ताकि परमेश्वर राष्ट्रों तक पहुँच सके और उन्हें अपने प्रेम में ला सके। यही परमेश्वर की योजना थी।

ये सभी अच्छी बातें हैं। लेकिन अगर मैं इसे इस तरह से कहूँ, तो बुराई की प्रतिभाओं में से एक, वर्तमान बुरे युग की प्रतिभाओं में से एक, यह है कि अच्छे के लिए बनाई गई हर चीज़ को एक तरह से तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता है और एक दमनकारी और विनाशकारी अंत की ओर

मोड़ दिया जाता है। पॉल के धार्मिक दृष्टिकोण में, एक ऐसा अर्थ है जिसमें परमेश्वर ने इस्राएल और अन्य राष्ट्रों के बीच भेद करने का इरादा किया था, वह भेद, और एक भेद होने का इरादा था, वह भेद वह सीमा नहीं बन पाया जिस पर इस्राएल राष्ट्रों से मिला ताकि यह पता लगाया जा सके कि वे एक साथ परमेश्वर के आशीर्वाद का आनंद कैसे ले सकते हैं।

वह भेद वह स्थल बन गया जिस पर इस्राएल और राष्ट्रों के बीच शत्रुता विकसित हुई। जब पौलुस मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के आगमन के बाद पीछे देखता है, जब वह इस वर्तमान बुरे युग पर पीछे देखता है, तो वह देखता है कि यहूदी धर्म जो बन गया है वह एक वास्तविकता है जो परमेश्वर के इरादों से अधिक वर्तमान बुरे युग द्वारा आकार दिया गया था। इसलिए, जब वह पीछे मुड़ने और स्टिचेरा और उन लोगों के गुलाम बनने जैसी बातें कहता है, जो स्वभाव से, कोई देवता नहीं हैं, तो वह यहूदी धर्म को अपने आप में बदनाम नहीं कर रहा है।

वह इज़राइल को बदनाम नहीं कर रहा है। वह कानून को बदनाम नहीं कर रहा है, लेकिन वह उस युग की ओर इशारा कर रहा है जिसे मोज़ेक कानून और इज़राइल के निर्माण से ठीक नहीं किया जा सका। ईश्वर ने राष्ट्रों के उद्धार के लिए कानून दिया, लेकिन जो कुछ हुआ वह ब्रह्मांडीय स्तर पर हुआ। ब्रह्मांड को बदलने की जरूरत थी।

और मोज़ेक कानून वास्तव में इसे लाने के लिए नहीं दिया गया था। नई सृष्टि को लाया जाना था, और इस युग को केवल मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा ही नष्ट किया जा सकता था और समाप्त किया जा सकता था। इसलिए, यदि हम व्यक्तिगत रूप से सोच रहे हैं, और यदि हम केवल एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण से उद्धार के बारे में सोच रहे हैं, तो हम यहूदी धर्म और सुसमाचार या कानून और सुसमाचार या मोज़ेक, आप जानते हैं, मोज़ेक प्रशासन और मसीह के सुसमाचार के बारे में सोचेंगे।

हम इस बारे में सोचेंगे कि उन्होंने व्यक्ति को कैसे प्रभावित किया, लेकिन वास्तव में, हमें एक वैश्विक दृष्टिकोण से सोचने की जरूरत है इससे पहले कि हम कॉर्पोरेट दृष्टिकोण की ओर मुड़ें, इससे पहले कि हम व्यक्तिगत दृष्टिकोण से जीवन के बारे में धर्मशास्त्र करें। तो, मुझे इसे मिटा देना चाहिए और शायद एक अलग छवि के साथ काम करना चाहिए जो उसी तरह की वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करती है। मैंने पहले ही इन दो युगों के बारे में बात की है, वर्तमान दुष्ट युग, युगों का क्रॉसओवर, और क्रॉस के रूप में जिसने नई सृष्टि को जन्म दिया, जो कि वह क्षेत्र है जो भविष्य में ईश्वर के राज्य में बदल जाएगा, और यह कैसे है कि हम इस तरह के युगों के क्रॉसओवर में यहीं रहते हैं।

पॉल के धर्मशास्त्र में, वह मूल रूप से इस युग, इस वर्तमान बुरे युग को इन ब्रह्मांडीय शासकों द्वारा संचालित देखता है जो परमेश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध खड़े हैं और मानवता को गुलाम बनाने के लिए काम कर रहे हैं। अब, यह पूरा युग, क्रूस के कारण, यह पूरी ब्रह्मांडीय वास्तविकता विनाश की ओर जा रही है और नष्ट हो जाएगी। पॉल ने आगे जो कुछ कहा है, उसका यही अर्थ है।

यदि आप शरीर के लिए बोते हैं, तो आप विनाश की फसल काटेंगे। यदि आप आत्मा के लिए बोते हैं, तो आप अनंत जीवन की फसल काटेंगे क्योंकि एक समुदाय जो यहाँ दृष्टिकोण और व्यवहार में निवेश करता है, वह एक ऐसा समुदाय होगा जो इस युग के नष्ट होने पर नष्ट हो जाएगा। जो समुदाय यहाँ खुद को निवेश करता है और आत्मा के फल लाता है, वह उसका प्रतिफल प्राप्त करेगा, जो कि अनंत जीवन है।

हालाँकि, यह एक ऐसा युग है जहाँ विनाश की गारंटी है क्योंकि इसकी देखरेख इन आध्यात्मिक संस्थाओं द्वारा की जाती है। यहाँ 1 से 11 आयतों में पॉल मूल रूप से यह कह रहा है कि जबकि चर्च को अपनी पहचान और व्यवहार में इस वास्तविकता से बने यहूदी पहचान को अपनाने की ज़रूरत है, यह इन गैर-यहूदी ईसाइयों के लिए वास्तव में रास्ता बदलना होगा और एक युग या आध्यात्मिक संस्थाओं के गुलाम बनना होगा जो वर्तमान बुरे युग की देखरेख करते हैं। अब गैर-यहूदियों के लिए, यानी पॉल यह नहीं कह रहा है कि यहूदी धर्म अपने आप में एक गुलाम बनाने वाला गतिशील है।

वह यह नहीं कह रहा है कि मूसा का कानून अपने आप में गुलाम बनाने वाला है, बल्कि वह यह कह रहा है कि गैर-यहूदियों को दिया गया संदेश, कि गैर-यहूदियों को एक सच्चे ईश्वर का आशीर्वाद पाने के लिए अपनी जातीयता बदलनी होगी, वह संदेश इस युग से आया संदेश है और उस संदेश को थामे रखना वास्तव में उस युग में वापस लौटना है। यह बहुत हद तक वैसा ही है, जैसा कि आजकल कोई कह रहा है, एक पश्चिमी अमेरिकी ईसाई के रूप में, अगर मैं किसी पुर्तगाली व्यक्ति से मिलता हूँ, तो मेरे लिए यह कहना कि मसीह में ईश्वर द्वारा दिए गए उद्धार को प्राप्त करने और उसमें रहने के लिए आपको मसीह को स्वीकार करना होगा और एक अमेरिकी पासपोर्ट प्राप्त करना होगा। आपको अपनी जातीयता बदलनी होगी और 4 जुलाई का जश्न मनाना शुरू करना होगा।

यह आपकी पुर्तगाली पहचान को त्यागने, अपनी पहचान बदलने और ये सभी नई आदतें सीखने जैसा है। आप जानते हैं, सुबह जल्दी उठना और 10 घंटे काम करना और इस तरह की चीजें और अब और झपकी नहीं लेना या जो भी हो। सभी सांस्कृतिक आदतों को अलग रखना होगा।

यह एक गुलामी का संदेश होगा क्योंकि ईश्वर की महिमा पूरे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था द्वारा नहीं की जाती है, एक एकल जातीयता बनकर। ईश्वर की महिमा ईश्वर के बहु-जातीय, बहु-राष्ट्रीय लोगों द्वारा धार्मिक रूप से की जाती है। सृष्टिकर्ता ईश्वर की महिमा मानवता द्वारा एक सिम्फनी के रूप में की जाती है, न कि पूरी मानवता द्वारा एक ही सुर बजाने के माध्यम से।

परमेश्वर चाहता है कि उसे ऐसे परमेश्वर के रूप में देखा जाए जो सभी राष्ट्रों का महान राजा है, न कि केवल एक राष्ट्र का। तो यह एक प्रकार का ब्रह्मांडीय परिदृश्य है जो मुझे लगता है कि गलातियों 4:1 से 11 तक के अर्थ को सही बनाता है। तो, जब पॉल कहता है, तो मैं कहता हूँ कि जब तक वारिस बच्चा है, वह मूल रूप से एक गुलाम है।

और वह वास्तव में इस बारे में बात करने जा रहा है, ठीक है, वह एक दास से बिल्कुल अलग नहीं है, भले ही वह सब कुछ का मालिक हो। इसलिए, एक वारिस, जो भविष्य में किसी निश्चित समय

पर कुछ प्राप्त करने जा रहा है, प्रबंधकों और राज्यपालों द्वारा देखरेख की जाती है। वह वास्तव में यहूदी ईसाइयों की स्थिति के बारे में बात कर रहा है, जिसके बारे में उसने अभी गलातियों 3 के अंत में बात की थी। आवश्यकता या मुझे कहना चाहिए कि मूसा के कानून ने एक शिक्षक की भूमिका निभाई, जिसने मसीह के आने तक इज़राइल को एक अलग इकाई के रूप में घेर रखा था।

पिता द्वारा निर्धारित तिथि तक संरक्षकों और प्रबंधकों के अधीन रहना। इसलिए, पॉल फिर पद 3 में कहता है, इसलिए हम भी, और मुझे लगता है कि यहाँ वह अभी भी यहूदी ईसाइयों के बारे में बात कर रहा है, जबकि हम मसीह से पहले बच्चे थे, यहूदियों को दुनिया की मूलभूत चीज़ों के अधीन बंधन में रखा गया था, जो एक तरह का कट्टरपंथी कथन है। यहाँ, वह अपनी मसीह-पूर्व यहूदी पहचान को उन शक्तियों और अधिकारियों के अधीन पहचान के साथ जोड़ रहा है, जिन्हें वह एक सच्चे ईश्वर ब्रह्मांडीय संस्थाओं के खिलाफ विद्रोह करते हुए भी याद करता है।

तो, यह एक तरह का क्रांतिकारी बयान है। फिर से, गलातियों में, वह यहूदी पहचान की एक और भी गहरी तस्वीर पेश करता है, जो वह अमूर्त रूप में नहीं देता। लेकिन वह इसे ब्रह्मांडीय दासता के अधीन अस्तित्व के रूप में चित्रित करना चाहता है।

इसलिए, पद 4 में, पूर्ण समय पर, परमेश्वर ने अपने पुत्र को उस दासता की स्थिति में, उस ब्रह्मांडीय रूप से उत्पीड़ित स्थिति में भेजा। उस स्थिति में, पुत्र आया, एक स्त्री से जन्मा, व्यवस्था के अधीन जन्मा, ताकि वह उन लोगों को छुड़ा सके जो व्यवस्था के अधीन हैं, अर्थात् यहूदी, ताकि हम पुत्रों के रूप में गोद लिए जाने का अधिकार प्राप्त कर सकें। यही पौलुस अभी भी अपने बारे में, यहूदी ईसाई मिशनरियों, पतरस, बरनबास आदि जैसे लोगों के बारे में बोल रहा है।

हालाँकि वह जानता है कि, बेशक, उद्धार अब गैर-यहूदियों तक विस्तारित हो गया है। इसलिए, यहाँ तस्वीर शत्रुतापूर्ण ब्रह्मांडीय शक्तियों के अधीन दासता की है, परमेश्वर ने बेटे को उस स्थिति में भेजा, और यीशु इस गुलामी की स्थिति में पहुँचे। यही कारण है कि गैलाटियन के अधिक हालिया व्याख्याकार, जैसे कि जे. लुइस मार्टिन, बेवर्ली गवेन्टा, जॉन बार्कले, आदि जैसे सर्वनाशकारी व्याख्याकार।

अवतार के बारे में बात करेंगे और, क्षमा करें, उनका नाम क्या है, हाल ही में गैलाटियन टिप्पणी की, मार्टिन डेबोअर। सर्वनाशकारी व्याख्याकार ब्रह्मांडीय दासता और यीशु मसीह के दुनिया में आने के बारे में बात करेंगे, जो कि उस गुलामी की स्थिति में भगवान के सर्वनाशकारी आक्रमण के रूप में है। पुत्र इस गुलामी की स्थिति में एक आक्रमण के रूप में दुश्मन के इलाके में लोगों को मुक्त करने और उन्हें नई रचना में लाने के लिए आता है।

चीजों को देखने का एक तरह का जोरदार, नाटकीय तरीका। इसलिए, उस स्थिति और इस परिस्थिति के आधार पर, हमें पद 9 से 11 में ये उपदेश मिलते हैं। लेकिन अब जब आप परमेश्वर को जान गए हैं, तो अध्याय 3 के अंत में या अध्याय 3 के मध्य में, पौलुस ने परमेश्वर के साथ उस घनिष्ठता को चित्रित किया है जो मसीह में सभी यहूदियों और अन्यजातियों के पास परमेश्वर के साथ है, परमेश्वर के साथ बिना किसी मध्यस्थता के संबंध।

लेकिन अब जब आप ईश्वर को जान गए हैं, या यूँ कहें कि ईश्वर आपको जान गया है, तो आप फिर से कमज़ोर और बेकार की मौलिक चीज़ों, इन स्टोइकिया, इन मौलिक आत्माओं, इन ब्रह्मांडीय शासक आकृतियों की ओर कैसे मुड़ते हैं जो वर्तमान बुरे युग की देखरेख करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि यह एक गुलामी वाला अस्तित्व है। आप उनकी ओर क्यों लौटेंगे और फिर से उनके गुलाम बनने की इच्छा क्यों करेंगे? आप दिन और महीने और मौसम और साल देखते हैं, एक अभिव्यक्ति जो वैसे उत्पत्ति, सृष्टि के खाते से आती है। मुझे आपके लिए डर है कि शायद मैंने आपके लिए व्यर्थ ही मेहनत की है।

इसलिए, पॉल इन गैलाटियन गैर-यहूदियों को शासन की ओर लौटते हुए, यहूदी पहचान की ओर मुड़ते हुए गुलामी की ओर मुड़ते हुए देखता है। जैसा कि मैंने कहा, यहूदियों के लिए यहूदी कैलेंडर का पालन करना अपने आप में गुलामी का अस्तित्व नहीं है। पॉल ने ऐसा किया।

प्रेरितों के काम 21 में, पौलुस त्यौहार के लिए यरूशलेम वापस जाने के लिए उत्सुक है क्योंकि वह एक यहूदी है। इसलिए, वह अन्य यहूदी ईसाइयों की तरह, अपनी यहूदी पहचान को पूरी तरह से अपनाता है क्योंकि यह जश्न मनाने के योग्य है। यह परमेश्वर के राजत्व का जश्न मनाने का एक तरीका है।

परमेश्वर के राजत्व का जश्न मनाने के अन्य तरीके भी हैं, जैसे कि तुर्की ईसाई के रूप में यीशु का अनुसरण करना और तुर्की, मिस्र, सीरियाई और जो भी हो, उसके लिए अद्वितीय तरीके से उनके राजत्व का जश्न मनाना। इसलिए, पौलुस इसे परमेश्वर के वास्तविक धर्मशास्त्र पर आधारित कर रहा है, जो सभी राष्ट्रों का एकमात्र राजा है। इसलिए, यह कहना नहीं है कि दिन, महीने, मौसम और वर्ष बुरी चीज़ें हैं, लेकिन गलातिया में गैर-यहूदी ईसाइयों को अपने स्वयं के दिन, महीने, मौसम और वर्ष मनाने की आवश्यकता है जो उनकी जातीयता के लिए विशिष्ट हैं।

इसलिए, पद 12 से 20 पर आगे बढ़ते हुए, पौलुस अब कुछ व्यक्तिगत उपदेश देता है। पद 12 में, वह कहता है, हे भाइयो, मैं तुमसे विनती करता हूँ, तुम भी मेरे जैसे बन जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे जैसा बन गया हूँ। उसका क्या मतलब है? पौलुस, फिर से, अगर हम उस व्यवस्था के बारे में सोचें जो हमने स्थापित की थी, तो वह उस बहिष्कारवादी दृष्टिकोण से बाहर निकल गया है, और वह अब एक ऐसी वास्तविकता में संगति कर रहा है जो स्थिर है, नई सृष्टि की वास्तविकता जो मसीह में सभी यहूदियों और अन्यजातियों से बनी है।

पॉल यहीं है। ये गैर-यहूदी ईसाई यहाँ वापस जाना चाहते हैं, खैर, पॉल ने इसे छोड़ दिया है। मसीह की मृत्यु में अपनी भागीदारी के कारण वह इस वास्तविकता के लिए मर चुका है।

वह यहाँ साथी यहूदी ईसाइयों, साथी गैर-यहूदी ईसाइयों के साथ रह रहा है। इसलिए, वह गलातिया में अपने भाइयों को बुला रहा है: तुम मुझे छोड़ रहे हो; मैं पहले ही तुम्हारे साथ जुड़ चुका हूँ, इसलिए मैं जैसा हूँ वैसा ही बनो, एक अच्छा गैर-यहूदी बनो। मानो, वह पहले से ही उन लोगों के साथ जुड़ चुका है जिन्हें पापी या बुतपरस्त माना जाता है।

हमने पहले ही इनमें से कुछ बहुत ही निजी नोट्स के बारे में बात की है, लेकिन पॉल उस समय को याद करता है जब वह उनके साथ था। आप जानते हैं कि यह एक शारीरिक बीमारी के कारण था कि मैंने पहली बार सुसमाचार का प्रचार किया था। याद रखें, हमने गलातिया में उनकी पहली यात्रा के बारे में बात की थी क्योंकि उन्हें अभी-अभी पत्थरबाजी का सामना करना पड़ा था, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें फिर से होश आ गया और उनकी शारीरिक स्थिति बहुत खराब हो गई।

उस समय वह सिर्फ एक लाश की तरह रहा होगा, हड्डियों का एक थैला जिसे कुछ हद तक स्वस्थ होने की ज़रूरत थी। और जो तुम्हारे लिए एक परीक्षा थी, मेरी उपस्थिति ने तुम्हें परीक्षा में डाल दिया। तुमने मुझसे घृणा नहीं की और न ही मुझसे घृणा की।

आपने मुझे ईश्वर के दूत के रूप में, स्वयं मसीह के रूप में स्वीकार किया। यह एक भावुक अपील है। तो फिर, आपके पास आशीर्वाद की वह भावना कहाँ है? क्योंकि मैं आपकी गवाही देता हूँ कि यदि संभव होता, तो आप अपनी आँखें निकालकर मुझे दे देते।

तो क्या मैं तुम्हें सच बताकर तुम्हारा दुश्मन बन गया हूँ? इसलिए, यह गलातियों से एक भावुक व्यक्तिगत अपील है कि वे जो कह रहे हैं उस पर ध्यान दें और उनके साथ अपनी पहली मुलाकात को याद करें। पद 17 में यरूशलेम के मिशनरियों का जिक्र करते हुए, वह उन पर चालाकी का खेल खेलने का आरोप लगाता है। वे उत्सुकता से आपकी तलाश करते हैं, लेकिन सराहनीय तरीके से नहीं।

इसका मतलब है कि वे आपको अपने पास रखना चाहते हैं। वे आपको बाहर रखना चाहते हैं ताकि आप उन्हें ढूँढ़ सकें। इसका मतलब है कि यहूदी मिशनरी यह कहना चाहते हैं कि आप लोग बाहर हैं; हमारे पास कुछ ऐसा है जो आप चाहते हैं।

इसलिए, वे चाहते हैं कि उन्हें खोजा जाए, लेकिन वे ऐसा अन्यजातियों को बाहर करके कर रहे हैं। और पौलुस पद 18 में कहता है कि उत्सुकता से खोजा जाना वास्तव में अच्छा है, लेकिन सराहनीय तरीके से। और वह इस बारे में बात करता है कि जब तक मसीह उनमें पूरी तरह से नहीं बन जाता, तब तक वह उनके साथ कैसे परिश्रम कर रहा है।

अंत में, गलातियों के इस भाग में, गलातियों के अध्याय 4 में, हमें 4.21 से 5.1 में यह रूपक मिलता है, सारा और हागर का यह रूपक, जो हर हेर्मेनेयुटिक्स प्रोफेसर के लिए अभिशाप है। पॉल यहाँ कुछ ऐसा करता है जो हेर्मेनेयुटिक्स प्रोफेसरों के अनुसार बाइबल के ग्रंथों के साथ किसी को क्या करना चाहिए, के विपरीत है। यानी, वह, जाहिर तौर पर, किसी तरह की रूपक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

बेशक, ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि, ठीक है, यह वास्तव में वह नहीं है जो वह करता है। लेकिन पौलुस यह संकेत देता है कि वह यही करता है जब वह कहता है, श्लोक 24 में, यह रूपकात्मक रूप से बोल रहा है। इसलिए, वह रूपक द्वारा एक तरह की व्याख्या प्रस्तुत कर रहा है।

खैर, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि मुझे लगता है कि पॉल यहाँ वास्तव में जो कर रहा है वह यह है कि वह पाठ की व्याख्या प्रस्तुत नहीं कर रहा है। वह पुराने नियम के इस अंश, सारा और हागर की कथा पर वापस नहीं जा रहा है, और कह रहा है, यह वास्तव में उत्पत्ति में पुराने नियम के पाठ का यही अर्थ है। वह कोई व्याख्या प्रस्तुत नहीं कर रहा है, हालाँकि मैं कई मायनों में सोचता हूँ, व्याख्या के इस युग में जिसे हम धार्मिक व्याख्या कहते हैं, उसकी शुरुआत के साथ, यह कमोबेश इस पाठ का धार्मिक वाचन या धार्मिक व्याख्या है।

क्योंकि इस परिदृश्य में, हम पुराने नियम के पाठ और उसकी व्याख्या से समकालीन अनुप्रयोग की ओर नहीं बढ़ रहे हैं। एक अर्थ में, धर्मवैज्ञानिक व्याख्या बाइबल के पाठों में व्याप्त है, ताकि परमेश्वर के अपने लोगों के साथ व्यवहार को समझा जा सके। पवित्रशास्त्र में हम किन पैटर्न को देखते हैं, और परमेश्वर अपने लोगों से विभिन्न चुनौतियों और अवसरों में क्या चाहता है? और क्योंकि पौलुस का मन पवित्रशास्त्र से परिपूर्ण और पवित्रशास्त्र से आकारित है, जब वह गलातिया में इस स्थिति के बारे में सोचता है, जब वह निराश होता है और गलातिया में विरोधियों और अपने श्रोताओं के विरुद्ध इन उपदेशों और आरोपों और अभियोगों को सामने रखता है, तो सारा और हाजिरा की यह कहानी उसकी कल्पना में उभरती है, और वह गलातिया में स्थिति को आकार देता है।

वह इसे गलातिया की परिस्थिति से बाहर खींचकर एक धर्मशास्त्रीय सेटिंग में समाहित कर लेता है, और फिर वह ईश्वर के तर्क के अनुसार चीजों को कॉन्फ़िगर करने के लिए बाइबल की भाषा बोलता है। इस तरह से धर्मशास्त्रीय व्याख्या काम करती है। समकालीन स्थितियों और बाइबिल के ग्रंथों के बीच की दीवारों को गिराएँ, और देखें कि वे किस तरह से खुद को इस तरह से फिर से कॉन्फ़िगर कर सकते हैं जो ईश्वर के तर्क को सामने लाए।

तो, यह पवित्रशास्त्र का एक प्रकार का धार्मिक पाठ है, और जरूरी नहीं कि व्याकरणिक-ऐतिहासिक व्याख्या हो, लेकिन वास्तव में पॉल यहाँ जो कर रहा है वह यह है कि वह कई तरह के संबंध बना रहा है जिससे पॉल गलातियों की कल्पना को आकार देना चाहता है ताकि वे जान सकें कि क्या करना है। यह एक तरह से, अगर कुछ है, तो एक सादृश्य है। यह कोई व्याख्या नहीं है।

लेकिन आप ध्यान दें कि पौलुस पद 21 में क्या कहता है: मुझे बताओ, तुम जो व्यवस्था के अधीन रहना चाहते हो, क्या तुम व्यवस्था को शास्त्र की वाणी के रूप में नहीं सुनते? क्योंकि लिखा है कि अब्राहम के दो बेटे थे, एक यहाँ की दासी से, दासी से, और एक स्वतंत्र स्त्री से। और फिर वह दास श्रेणी के अंतर्गत कई तरह के संबंध बनाता है, वह कई तरह के संबंध बनाता है, और स्वतंत्र श्रेणी के अंतर्गत वह कई तरह के संबंध बनाता है, और श्रेणी के अंतर्गत वह हागर, इश्माएल, मांस, माउंट सिनाई और वर्तमान यरूशलेम की बात करता है, जो उत्तेजक होगा, खासकर अगर यरूशलेम के मिशनरी दर्शकों में बैठे हों। यह एक बिल्कुल भड़काऊ संबंध है।

स्वतंत्र श्रेणी में, वह कई अन्य संगति बनाता है। सारा, स्वतंत्र महिला, इसहाक, प्रतिज्ञा की रेखा। वह प्रतिज्ञा और आत्मा के बारे में भी बात करता है, और अंत में, वह ऊपर यरूशलेम के बारे में बात करता है।

तो, नई सृष्टि के स्वर्गीय या परमेश्वर के राज्य की मंजिल, यहीं पर वह उन सभी स्वतंत्र लेबलों को जोड़ना चाहता है, और यहीं पर वह उन सभी प्रकार के दास लेबलों को जोड़ना चाहता है। तो, वह मूल रूप से इस पुराने नियम की कहानी को लेता है, इसे गलातिया में स्थिति के ऊपर डालता है, और फिर यशायाह 54 से इस उपदेश को सामने लाता है, जो कि पुनर्स्थापित यरूशलेम के बारे में बात करता है, जिसके बारे में यशायाह बात कर रहा है। फिर से, पौलुस का बाइबिल के ग्रंथों को एक साथ लाने का बहुत ही रचनात्मक तरीका है।

हमारे पास सारा और हागर की कहानी है, और यह उसे यशायाह के इस दूसरे बाइबिल पाठ के बारे में सोचने पर मजबूर करती है जो यह कहता है: हे बांझ स्त्री जो बच्चे को जन्म नहीं देती, आनन्द मना, तू जो प्रसव पीड़ा में नहीं है, जोर से चिल्ला, क्योंकि त्यागी हुई स्त्री की संतान पति वाली स्त्री से अधिक है। और हे भाइयो, तुम जो गलातिया में हो, इसहाक के समान हो। तुम प्रतिज्ञा की संतान हो।

लेकिन उस समय, जो शरीर के अनुसार जन्मा था, उसने आत्मा के अनुसार जन्मा व्यक्ति को सताया, यह गलातिया की स्थिति के बारे में क्या कहता है? वह यहूदी मिशनरियों को शरीर की संतानों के साथ जोड़ रहा है और गलातिया के अन्यजातियों को आत्मा की संतानों के साथ जोड़ रहा है। यही बात अब गलातिया में भी सच है। खैर, इन सभी आख्यानों के संबंध में, शास्त्र क्या कहता है? यहाँ वह इस पाठ को सामने लाता है।

यहीं पर वह गलातियों का मार्गदर्शन करना चाहता है। दासी और उसके बेटे को निकाल दो, क्योंकि दासी का बेटा स्वतंत्र स्त्री के बेटे के साथ वारिस नहीं होगा। इसलिए, भाइयो, हम दासी की संतान नहीं बल्कि स्वतंत्र स्त्री की संतान हैं।

मसीह ने हमें आज़ादी के लिए आज़ाद किया है। इसलिए, दृढ़ रहो और फिर से गुलामी के जुए के अधीन मत हो। तुम आज़ादी के दायरे में हो।

कोई है जो तुम्हें वापस खींच रहा है। ये लोग, जो असल में गुलाम औरत के बच्चे हैं, वे तुम्हें वापस गुलामी की ओर खींच रहे हैं। उनकी बात मत सुनो।

आप आत्मा की उपस्थिति के आनंद की पूर्णता में मुक्त हो गए हैं। आप यहूदी ईसाई, यह वही है जो अब्राहम से बहुत पहले वादा किया गया था। आप गैर-यहूदी, यह अब्राहम के वादे की पूर्ति है कि सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद दिया जाएगा।

यह आज़ादी का दौर है। गुलामी में वापस न खींचे जाएँ। हालाँकि, इस तरह की आज़ादी की प्रकृति के बारे में कुछ बातें कहनी हैं।

यह मत सोचिए कि पॉल जिस तरह की आज़ादी की बात कर रहे हैं, वह आधुनिक पश्चिमी स्वतंत्रतावादी आज़ादी के समान है, जिसका मतलब है कि आप जो चाहें कर सकते हैं। पॉल जिस तरह की आज़ादी की बात कर रहे हैं, वह है, जैसा कि हमने पहले कहा है, झूठी पहचानों से आज़ादी, मेरी ईसाई पहचान को किसी भी तरह की जातीयता से जोड़ना, सामाजिक रूप से लगाई गई अपेक्षाओं से आज़ादी, दूसरे ईसाइयों की निंदा से आज़ादी, पर्याप्त रूप से अच्छा न

होने से आज़ादी। वास्तव में, यहीं पर मुझे लगता है कि गलातियों में पॉल के धर्मशास्त्र के गहरे आवेग आज की ईसाई संस्कृति पर बहुत लागू होते हैं।

यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे कहाँ से देख रहे हैं, लेकिन खास तौर पर अमेरिकी ईसाइयों के लिए जो अंतहीन रचनात्मक हैं। हमने अपनी रचनात्मकता का इस्तेमाल ईसाई धर्म को कई अलग-अलग शब्दों में पैकेज करने के लिए किया है। इसलिए जिन लोगों के पास युवा परिवार हैं, हमें इस प्रकाशक, इस वक्ता, इस मार्केटिंग समूह द्वारा बताया गया है कि यहाँ बताया गया है कि आप कैसे एक आदर्श ईसाई परिवार बना सकते हैं।

यह किताब खरीदें। इन सेमिनारों में जाएँ। हालाँकि, वहाँ अनिवार्य रूप से जो होता है, वह यह है कि जो लोग इस तरह से परिवार चलाते हैं, वे अलग तरीके से परिवार चलाने वाले लोगों पर निर्णय देना शुरू कर देते हैं, और जो लोग उस पैकेज को नहीं खरीदते हैं, वे इन लोगों पर निर्णय दे सकते हैं।

तो, मेरा मतलब है, ईसाई धर्म एक तरह से वर्तमान बुरे युग में इतनी सूक्ष्मता से और इतनी आसानी से समाहित हो जाता है। क्या आप इस बात पर जा रहे हैं कि भगवान के वचन सेमिनार के अनुसार अपने पैसे का प्रबंधन कैसे करें, या नहीं? तो, क्या आप इन-ग्रुप का हिस्सा हैं या आउट-ग्रुप का हिस्सा हैं? मसीह में स्वतंत्रता का मतलब है उस तरह की सभी चीज़ों से मुक्त होना, जो आप करना चाहते हैं उसे करने की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि उन लोगों से स्वतंत्रता जो आप पर अपनी अपेक्षाएँ थोपते हैं कि वास्तव में भगवान को क्या पसंद है। भगवान को जो पसंद है वह है आत्म-बलिदानपूर्ण प्रेम में जीया गया विश्वास का जीवन और, ज़ाहिर है, भगवान जो कर रहे हैं उसमें पूरी तरह से भाग लेने की स्वतंत्रता, आत्मा की मुक्ति देने वाली शक्ति का अनुभव करना, जो सांसारिक अपेक्षाओं के अनुसार, वास्तव में हमेशा विपरीत होने वाला है।

चूँकि हम हमेशा, हर किसी की कल्पना वर्तमान बुरे युग की सोच से एक हद तक आकार लेती है, इसलिए नई सृष्टि में पहुँचा जाना यह पहचानना है कि जब मैं एक मध्यम वर्ग के श्वेत ईसाई के रूप में दूसरे ईसाइयों के साथ खड़ा होता हूँ, तो मैं आत्मा की मुक्तिदायी शक्ति का अनुभव करता हूँ, जो एक अलग सामाजिक वर्ग के हैं। जब मैं, एक श्वेत पुरुष के रूप में, ईश्वर के आशीर्वाद के आश्चर्य का अनुभव करने के लिए हिस्पैनिक और अफ्रीकी-अमेरिकी ईसाइयों के बगल में खड़ा होता हूँ, तो मैं उन लोगों के साथ ईश्वर की भलाई के आश्चर्य का अनुभव करने की स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता हूँ, जिनके बारे में मुझे बताया गया है कि वे मुझसे अलग हैं, और मुझसे कम हैं, या एक या दूसरे तरीके से मुझसे अलग हैं। लेकिन ईश्वर की मुक्तिदायी शक्ति का अनुभव करना हमेशा उस संस्कृति के विपरीत होगा जिसने मेरी कल्पना को आकार दिया है।

इसलिए, यह ईश्वर द्वारा अपने एक बहु-राष्ट्रीय, बहु-जातीय परिवार का निर्माण करके जो कुछ किया गया है, उसकी पूर्णता में रहने की वास्तविक स्वतंत्रता है, जो मुझे लगता है कि ईसाई पहचान को एक साहसी व्यक्ति होने के पथ पर स्थापित करता है, ईसाई पहचान में रहने के सभी अलग-अलग तरीकों और सभी नए तरीकों की खोज करता है। जब सामाजिक नैतिकता की बात आती है, तो दुख की बात है कि ईसाई अक्सर संस्कृति से पिछड़ जाते हैं, लेकिन जब सामाजिक नैतिकता की बात आती है, तो हमें संस्कृति के सामने नहीं रहना चाहिए, जो संस्कृति कर रही है

या जो संस्कृति किसी दिन करेगी। हम बस सामाजिक नैतिकता को एक अलग तरीके से करते हैं।

परमेश्वर द्वारा बनाए जा रहे परिवार के बारे में सोचते हुए, हम उसमें कैसे रह सकते हैं? हम उसे कैसे मूर्त रूप दे सकते हैं? फिर से, यह वह नहीं है जो हमें करना चाहिए। हमें यही करना चाहिए क्योंकि जब हम ये काम करते हैं, तो हम परमेश्वर की उपस्थिति का अधिक से अधिक अनुभव करते हैं, परमेश्वर की जीवन देने वाली आत्मा का अधिक से अधिक अनुभव करते हैं, हमारे बीच परमेश्वर की नवीनीकरण करने वाली शक्ति का अधिक से अधिक अनुभव करते हैं, और इसका परिणाम मसीह में परमेश्वर की महिमा में अधिक से अधिक होता है।

यह डॉ. टिम गाम्बस और गलातियों की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह गलातियों 4:1-5:1 पर सत्र 6 है।